यादों की बारात में हिंदी..

डॉ एम.देवराज,
फ्लाट नं. 5, प्रथम स्ट्रीट, वेंकटकृष्ण नगर,
अरुंबक्कम, चेन्नै
दिनांक 20.11.2000

प्रश्नः *आपने 1995 को केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक का पद भार ग्रहण किया था. इस से पहले आप सी आइ एफ ई बंबई जो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का एक ऐसा संस्थान है जहाँ हिंदी का उत्कृष्ट कार्यन्वयन हो रहा है, में कार्य कर रहे थे. ऐसे एक संस्थान से सी एम एफ आर आइ के निदेशक होते हुए आने पर हिंदी के कार्यान्वयन में आपने कुछ अन्तर महसूस किया होगा. सी एम एफ आर आइ में हिंदी से जुडे आपका पहला अनुभव, क्या आपको याद है?*

उत्तरः हिंदी के मामलों में सी एम एफ आर आइ कोचीन और सी आइ एफ ई बंबई में ज़रूर अंतर है, अंतर इसलिए कि सी आइ एफ ई बंबई में स्थित है जो हिंदी भाषी राज्यों के बहुत निकट है इसलिए हिंदी वहाँ आसान है, कार्यालयों में इसका प्रभाव स्वाभाविक है. इसलिए सी एम एफ आर आई के निदेशक होते हुए और राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष होते हुए हिंदी के प्रचार केलिए ज़्यादा कोशिश करना पडा था. यदि मेरी याद ठीक है तो हिंदी से जुडे मेरा पहला कार्य एक प्रकार्यात्मक हिंदी कार्यशाला का आयोजन था जिसका उद्घाटन आदरणीय संघ सह गृहराज्य मंत्री श्री राम लाल राही ने किया था.

प्रश्नः *आपने बोला कि एक प्रयोजनमूलक कार्यशाला का आयोजन किया था, प्रयोजनमूलक कार्यशाला से आपका मतलब क्या है ?*

उत्तरः प्रयोजनमूलक से मेरी विवक्षा संस्थान के प्रकार्यों को प्रयोजनपरक रीति या भाषा में अभिव्यक्त करने से है. देखिए, सी एम एफ आर आइ एक वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान है जिसके प्रकार्य विज्ञान व प्रौद्योगिकी से जुडे हैं . हमारे देश में आज भी विज्ञान व प्रौद्योगिकी की भाषा अंग्रेज़ी है इसलिए आम जनता के बीच इन में हुए विकासों को पहुँचाने में हम विफल हो जाते हैं, विशेषकर किसानों के बीच जो कृषि से जुडे इस संस्थान में होनेवाली उपलब्धियों के कार्यकर्ता हैं. उनके बीच इन सूचनाओं को पहूँचाने केलिए देश की अधिकांश जनता की भाषा हिंदी में प्रकार्यों की अभिव्यक्ति करने की दक्षता बढाना इस प्रयोजनमूलक कार्यशाला का उद्देश्य था. हम ने केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर के सहयोग से एक सप्ताह का यह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था.

प्रश्नः *हिंदी कार्यान्वयन की कई योजनाएं हिंदी के प्रशासनिक क्षेत्र में केंद्रीत करते रहते इस समय हिंदी को*

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भाषा बनाने के लिए आप द्वारा किया गया यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है. संस्थान में हिंदी के प्रयोग में सुधार लाने केलिए यह प्रशिक्षण कहाँ तक सहायक निकला क्या आप व्यक्त कर सकते हैं ?

उत्तर: यह तो राजभाषा के नेमी कार्यान्वयन कार्यों जैसे भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम में बताए गए द्विभाषीकरण, अनुवाद आदि की अपेक्षा कार्यान्वयन की एक नई दिशा थी. इसके फलस्वरूप संस्थान के कई वैज्ञानिक अपने अनुसंधान लेख हिंदी में लिखने और प्रस्तुत करने केलिए आगे आए .

प्रश्न: *आपने ठीक ही कहा सर, वैज्ञानिकों के तरफ़ से कोशिश हुए थे. संस्थान की वैज्ञानिक उपलब्धियों को अभिव्यक्त करने में हिंदी भाषा की सक्षमता के बारे में आप की क्या राय है ? ऐसी अभिव्यक्ति की भाषा के रूप में हिंदी के विकास के लिए आप द्वारा क्या क्या कदम उठाए गए हैं ?*

उत्तर: संस्थान में पहले ही समुद्री मात्स्यिकी सूचना सेवा और सी एम एफ आर आइ समाचार जैसी पत्रिकाएं नियमित रूप से निकाली जाती थीं जिन में प्रमुख वैज्ञानिक लेखों का हिंदी अनुवाद है. वास्तव में विज्ञान विषयक लेखों के विकास के लिए वैज्ञानिकों को खुद रचनाएं करना चाहिए. अतः इन बातों को मानते हुए "समुद्री मात्स्यिकी के अनुसंधान के बदलते परिवेश" तथा "लघु पैमाने की समुद्र कृषि और लघु पैमाने का समुद्र मत्स्यन" विषयों पर हिंदी में वैज्ञानिक संगोष्ठियाँ आयोजित की गई. इन में कुलमिलाकर 28 लेख प्रस्तुत किए गए और संगोष्ठियों के दौरान प्रकाशित इन लेखों की पुस्तकें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सभी संस्थानों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों को भेज दी गई.

प्रश्न: *आप ने बताया कि दूसरी संगोष्ठी 'लघु पैमाने की समुद्र कृषि और लघु पैमाने का समुद्र मत्स्यन' विषय पर थी. मुझे याद आती है कि इस विषय के सांगत्य को लेते हुए कड़ी आलोचनाएं हुई थीं. लेकिन संस्थान की जानकारियों को पूरे देश में फैलाने में यह विषय सार्थक साबित हुआ था. इस प्रकार आलोचनाएं होने पर भी कई अवसरों पर आप की दूरदर्शिता स्वीकार्य बन गई है. उदाहरण के तौर पर मैं हिंदी में आयोजित कृषक मेलाएं रखना चाहती हूँ . वैसे आपके समय में इसी प्रकार के विस्तार कार्यक्रमों को विशेष बल दिया गया था, इसका क्या कुछ विशेष कारण है?*

उत्तर: प्रौद्योगिकियों का स्थानांतरण परिषद का ही विषय है. इसे लेते हुए संस्थान ने वेरावल और बंबई अनुसंधान केंद्रों में समुद्र कृषि एवं समाज-आर्थिक विषयों पर हिंदी में कृषक मेलाएं चलाई कि ये प्रांत हिंदी के निकटवर्ती हैं. इस सिलसिले में हिंदी में विस्तार पुस्तिकाएं भी प्रकाशित कीं. इन अनुसंधान केंद्रों में आयोजित मेलाओं का अत्यधिक प्रचार मिल गया. इसे मानते हुए हिंदी के साथ ही साथ संस्थान में विकसित तकनोलजियों को राष्ट्रीय भाषाओं में विकीर्णन करने केलिए हम ने योजनाएं रूपाइत की थी. ये योजनाएं प्रयोग में लाए गए या नहीं मुझे सन्देह है.

प्रश्न: *आपका संदेह सही है, निधि के अभाव में यह हम पूरा नहीं कर पाया. एक प्रमुख वैज्ञानिक होने के नाते विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के संबंध में आप की निश्चित योजनाएं हैं. इसके साथ ही साथ मैंने देखा कि राष्ट्र एवं राष्ट्रीय भाषाओं के प्रति आप के विचार आधिकारिक एवं व्यावहारिक हैं. बहुभाषीयता और भाषाई एकता के बारे में आप के विचार व्यक्त करें तो बडी खुशी होगी.*

उत्तरः भारत बहुभाषी राज्यों का एक संघ है. भाषाओं के आधार पर देश के राज्यों में विभाजन हम रोक न जा सका. राष्ट्रीय भाषाएं या मातृभाषाएं सर्वमान्य हैं और इन पर संकट डाला नहीं जा सकता. संविधान में दिए गए अनुसार सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए हमें कदम उठाने चाहिए. सभी राष्ट्रीय भाषाओं का प्रयोग एवं प्रचार बढ़ाया जाना संघ का दायित्व है. प्रत्येक कार्यालयों के राजभाषा विभाग भाषाई सद्भाव के प्रचारक व मध्यस्थ के रूप में काम करना अभिलषणीय होगा.

प्रश्नः *आप ने जो कहा, ठीक ही कहा है. सरकार की राजभाषा नीति कई भाषाओं की नीति है. इन भाषाओं का समन्वयन से राजभाषा का प्रचार हो सकता है. लेकिन दौर्भाग्यवश उचित ध्यान न दिए जाने की वजह से इस नीति के कई पहलु कार्यान्वयन के अधीन नहीं आते हैं. आप के दूरगामी दृष्टिकोण हमेशा हमारा मार्गदर्शन किया है. जी, आप की कालावधि में वैज्ञानिक स्तर पर हिंदी के प्रयोग के अतिरिक्त अन्य कार्यों पर भी कार्यान्वयन किया हुआ होगा ? ज़रा व्यक्त करें तो..*

उत्तरः संस्थान के कर्मचारियों के बीच हिंदी लोकप्रिय बनाने केलिए 'राजभाषा सर्कुलर' नामक एक पत्रिका निकालना मेरा सुझाव था. इसमें स्वयं शिक्षण पाठ, प्रेरणाप्रद संपादकीय तथा प्रतियोगिता कोर्नर सम्मिलित थे. कर्मचारियों के बीच इसकी बडी मांग थी.

प्रश्नः *जी, आप की कालावधि के दौरान हिंदी के कार्यान्वयन के लिए किए कुछ विशेष कार्यक्रम, सराहना क्या आपके याद में है ?*

उत्तरः हाँ ! वर्ष 1998-99 के दौरान सी एम एफ आर आइ का निदेशक, कोचीन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह का समन्वयक था. इस कार्यक्रम में कोचीन नगर के लगभग 100 केंद्र सरकार कार्यालयों , स्वायत्त संगठनों ओर निकायों के 600 कर्मचारियों ने भाग लिया. राजभाषा के ज़रिए मिलके काम करने का उत्कृष्ट दृष्टांत था, यह अनुभव इस अवसर पर सी एम एफ आर आइ ने अपनी नारा 'भाषाई सद्भाव देश का अभिज्ञान, भाषाई अस्मिता देश का पहचान' पर एक पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की. इस का व्यापक प्रचार मिला और कोचीन के विभिन्न केंद्र सरकार कार्यालयों से प्राप्त 24 पोस्टरों में उत्तम तीन को पुरस्कार प्रदान किए.

इस वर्ष में कोचीन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यालयों में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन केलिए संस्थान को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

प्रश्नः *अंतिम प्रश्न सर, बहुत गौरवपूर्ण है, राजभाषा के सम्बन्ध में आपके सामान्य विचार और भूमंडलीकरण के बदलते परिवेश में राजभाषा हिंदी के टिकाऊपन केलिए आप के सुझाव ?*

उत्तरः इस देश के नागरिक के रूप में हमें अपने देश की धनी विरासत, संस्कृति , भाषा, कला प्रजातंत्र तथा अर्थ व्यवस्था पर गौरव होना चाहिए. पर गैरव जगाने केलिए भाषा नीति में देश के सभी भाषाई और सांस्कृतिक मूल्यों व तत्वों को समान रूप से आदर करने का दिशा-निर्देश दिया जाएं. भूमंडलीकरण द्वारा सरलीकृत भारतीय अर्थव्यवस्था विभिन्न क्षेत्रों के बीच भाषाई संसूचनाओं को बढावा देने लायक उदार होनी चाहिए. पूरे देश के स्कूलों व कालेजों में हिंदी , बंगाली और तमिल जैसी क्षेत्र प्रमुख भाषाएं सिखाने की वजह से उपर्युक्त उद्देश्य सार्थक बन जाएगा.